International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

रीतिमुक्त काव्यधारा में वस्तु पक्ष

नाम - मनिंदर
मोबाई नम्बर - **9466013710**
ईमेल आई डी - **manindersheokand83@gmail.com**

"जब कभी भी कसी देश का सांस्कृतिक जीवन वकासोन्मुख होता है, तो उसके मानवी तथा आ र्थक साधन भन्न-भन्न हो जाते हैं। उनकी भौतिक आवश्यकताओं में ही वृ द्ध होती जाती है। बहुत कम इन्सान ही संतुष्ट हो पाते हैं और अ धकतर लोग निर्धन होते चले जाते हैं। ऐसे में मानव की आवश्यकताएं भारमुक्त हो जाती है। उस समय सांस्कतिक जीवन की सामूहिक चेतना से भी व्यक्तिगत जीवन बिल्कुल अलग सा हो जाता है। वह नष्ट होकर नैतिक समस्याओं को जन्म देता है इस लए मनुष्य की शक्ति सुख, सम्पत्ति और सत्ता की प्राप्ति में लग जाती है।"

मेरा वषय 'रीतिमुक्त काव्यधारा में वस्तु पक्ष है। जिसका मैंने अध्यायों में वर्गीकरण कया है। इसमें रीतिमुक्त काव्य की अवधारणा, रीतिबद्ध क वयों का सामान्य परिचय रीतिबद्ध व रीतिमुक्त काव्य में अन्तर, सामान्य प्रवृतियाँ व इतिहास है।

रीतिमुक्त अवधारणा के अन्तर्गत रीतिमुक्त शब्द का अर्थ है रीति से मुक्त। मुक्त शब्द की व्युत्पत्ति मुच् धातु में क्त प्रत्यय लगने पर होती है। जिसका अर्थ है छोड़ा हुआ।

रीतिबद्ध का जन्मदाता आचार्य केशवदास को माना जाता है। इसका जन्म अनुमान के अनुसार सं. **1612** वक्रमी माना जाता है और मृत्यु अनुमान सं. **1674** है। रामायण वषयक उनका एक ग्रंथ मलता है। उनका नाम है रामचन्द्रिका उनके दो प्र सद्ध ग्रन्थ हैं, र सका प्रया और क व प्रया। दो छोटे ग्रन्थ नख-शख वर्णन और छन्दमाल भी रीतिकाव्य से ही सम्बन्धित ग्रन्थ हैं।

चंताम ण का जन्मकाल सं. **1666** के लगभग माना जाता है। चंताम ण के पांच ग्रन्थों, में काव्य ववेक, क वकुल, कल्पतरु, काव्यप्रकाश, रसमंजरी, पंगल और रामायण। इन्होंने इसके साथ ही शृंगार वषयक उत्कृष्ट छंद लखे हैं।

इससे आगे मतिराम भी एक सफल क व है। इनका जन्म सं. **1660** के लगभग और स्वर्गवास **1750** के आस-पास माना जाता है। मतिराम की प्र सद्ध रचना, ल लत ललाम्, रसराज, फूलमंजरी, छंदसार पंगल, मतिराम सतसई हैं। रसराज और ल लत ललाम प्र सद्ध ग्रन्थ हैं। मतिराम की क वता में कृत्रिमता लेशमात्र भी नहीं हैं। ये सरस और सुकुमार रचना के धनी हैं।

रीतिबद्ध क व देव का जन्म सन् **1673** ई. में इटावा में धोर सय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनका पूरा नाम देवदत्त था। इनके ग्रन्थों में भाव वलास, अष्टयाम, भवानी वलास सुजान वनोद आदि हैं। देव में मौ लकता और क वता करने की प्रतिभा खूब थी पर उनके समान स्फुरण में उनकी रू च प्रायः बाधक हो जाती थी। पर कहीं-कहीं पर इनकी कल्पना बहुत सूक्ष्म और दुरारूढ़ है। अन्तिम क व पद्माकर का

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जन्म सन् **1753** ई. में नांदा में हुआ था। इनकी अब तक **9** रचनाएं उपलब्ध हुई हैं। इन्होंने कुछ स्फुट अपनाया है।

इनमें प्रमुख रीतिमुक्त क वयों का जीवनवृत्त, व्यक्तित्व तथा कृतित्व का उल्लेख कया गया है। घनानंद का जन्म सम्वत् **1746** माना है। क व आलम का समय काल **1640** से **1650** निश्चित है। इनकी जाति का इनके काव्य में कोई उल्लेख नहीं मलता। इसके बाद क व बोधा दो क व है। एक को **1804** और दूसरे को **1855** माना है। इसका निवास स्थान फरोजाबाद है। इनकी मृत्यु **1860** से कुछ वर्षों बाद मानी जाती है। चैथे क व ठाकुर जी जन्म कुछ वर्षों बाद मानी जाती है। चौथे क व ठाकुर जी जन्म ति थ सम्वत् **1823** तथा जन्म स्थान ओरधा है।

इन क वयों का जीवन संबंधी प्रमा णक इतिहास संदिग्ध है या ऐसे कहें क आधुनिक काल के पूर्व के कसी भी क व का जीवन इतिहास के आवरण में ढक चुका है। इन क वयों का व्यक्तित्व स्वतंत्र एवं स्वच्छंद प्रवृति का है। अ भव्यक्ति समर्थता, निर्भीकता, परोपकारी, सदाचारी, अनुभवों से ओत-प्रोत आदर्श प्रेमी आदि इनके व्यक्तित्व के कुछ आधार रूपी गुण है।

घनानंद की सबसे ज्यादा **41** कृतियाँ प्रमा णत हैं। आलम की माध्वानल कामकंदला, आलमके ल, स्याम स्नेही तथा सुदामा चरित है। क व बोधा की वरहवारीश और इश्कनामा काव्य कृतियाँ है। ठाकुर क व की रचनाएं 'ठाकुर-ठसक' में प्रका शत हुई है।

इसमें 'रीतिमुक्त काव्य में वस्तु-पक्ष' के अन्तर्गत धर्म का उल्लेख करते हुए कहा गया है क भारतीय धर्म का मूल मानव वश्वास और आस्था जीवन और जगत् दोनों के लए है। जीवन एक अव्यन्तिक स्वतः सद्ध प्राकृतिक मूल्य है। जीना सहज धर्म है। रीतिकाल से पहले भक्तिकाल में उनके भक्ति आन्दोलनों ने सामान्य वर्ग की नैतिकता और श्रेष्ठता की सीख प्रदान की थी। रीतिमुक्त क वयों की भक्तिभावना राधाकृष्ण के प्रति मथुरा एवं कांता भाव की भक्ति रही है। धनानंद ने कृष्ण की कृपा को पाने के लए उनके भक्ति पर अ धक बल दिया है।

रीतिमुक्त सभी क व स्वच्छन्द प्रवृति के थे। इस लए उनमें प्रकृति- चत्रण स्वच्छन्द रू च झलकती है। प्रकृति से कोई भी अछूता नहीं रह सकता। इनके काव्य में प्रकृति के व वध रूपों का वर्णन हुआ है। घनानंद के काव्य में आलम्बन रूप में प्रकृति- चत्रण के गने-चुने स्थल है।

रीतिमुक्त क व सम्पूर्ण समाज की कायाकल्प करने के इच्छुक थे। इन क वयों ने सहज और स्वाभा वक अ भव्यक्ति करके शताब्दियों की ग र्भत कुरीतियों की जड़ में खाद डालकर समूल नष्ट कर देने की बात कही है।

संस्कृति शब्द का सम्बन्ध संस्कार शब्द से लया है। जिसका अर्थ संशोधन करना। संस्कृत शब्द का भी यही अर्थ है। संस्कार व्यक्ति व जाति के होते हैं। जातीय संस्कारों को भी संस्कृति कहते हैं। दूसरे शब्दों में संस्कृति से हमारा अ भप्राय परम्परागत समझ बूझों के संगठित समूह से अर्जित वशेषताओं एवं व्यवहार के प्रतिमानों का भोग है जो व्यक्ति एवं संस्था द्वारा आने वाली पीढ़ियों को हस्तांतरित कर दिया जाता है।

रीतिमुक्त क वयों के काव्य में रस योजना अनूठी है। रस शब्द का अर्थ पहले शृंगार को समझा जाता था। आचार्य भरत के नाट्य शास्त्र बनने तक यही बात थी। इसी प्रसंग में भरत की उक्ति "अष्टौ नाट्ये रखा स्मृताः" इका अ भप्राय यह ठीक बैठता है क नाटक में आठ रस होते हैं। अन्यत्र चाहे एक हो। इस लए घनांनंद, आलम, बोधा व ठाकुर ने अपने-अपने काव्य में रसों का उल्लेख कया है। इनका मुख्य रस शृंगार रस ही रहा है। क्यों क ये सभी क व प्रेमी थे। नीतिकारों की काव्य शैली पर और वचार अपे क्षत है। नीतिकारों की अपेक्षा सरसता ठाकुर में अ धक है। उसका कारण यह है क इन्होंने प्रेम के सम्बन्ध नीति के पक्ष लखे हैं।

समाज में अनेक रीति-रिवाज प्रच लत हैं। रीति-रिवाजों को लोक संस्कृति का प्राण तत्व कहा जा सकता है क्यांे क ये रीतिरिवाज ही समुदाय तथा व्यक्ति के स्तर तथा उसकी नाना प्रकार की अनुभूतियों के साक्षी होते हैं जो वर्तमान समय में धूँधले से पड़ गए हैं।

लोक जीवन के अन्तर्गत कहा गया है क कोई भी प्राणी-समाज प्राकृतिक एवं मानवीय संबंधों से अलग का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष आंकलन कए बिना सामने नहीं आ सकता। इस बात के आधार पर रीतिमुक्त क वयों में लोक जीवन अपनी खूबियों एवं क मयों के साथ प्रकट हुआ है। इन क वयों ने जन-जीवन को अपनी खुली आँखों से देखा है। इनकी पैनी दृष्टि अपने वातावरण का कोना-कोना देख आई, जिसकी स्पष्ट अ भव्यक्ति इनके काव्य में झलक पड़ती है।

सन्दर्भ -

1 हिन्दी साहित्य का इतिहास - डाॅ. नगेन्द्र
2 हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
3 हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास - डाॅ. गणपति चंद्र गुप्त
4 www.bharatdiscovery.org